**ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत।**
**सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत।। १३ ।।**

वरन यह स्वप्न के तन तो सपने की तरफ ही खींचते हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही है जो हमें सपने से खींचकर श्री राजजी से मिलवाता है।

**यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम।**
**इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम।। १४ ।।**

इस उलटी दुनियां से सीधे रास्ते पर जागृत बुद्धि तारतम वाणी के बिना कोई नहीं ला सकता। जागृत बुद्धि तुम्हारी चाहना पूरी करके यहां जगाकर श्री राजजी की तरफ खींचती है।

**ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए।**
**जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए।। १५ ।।**

यह जो कुछ हो रहा है सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है। नहीं तो जाग जाने पर परआतम में फरामोशी कैसे रह सकती है? यह हुकम ही जगाकर मिला देगा।

**सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान।**
**ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान।। १६ ।।**

श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कौन सी मेहर कर रहे हैं उसकी खबर हमको नहीं होती। मेहरबान श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह से मेहर करते ही रहते हैं।

**महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर।**
**तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर।। १७ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर की समझ रूहों को आ जाए तो अज्ञानता की रात मिटकर ज्ञान का सवेरा हो जाए।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १७५ ।।

## सागर तीसरा एक दिली रूहन की

**अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत।**
**रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत।। १ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि तीसरा सागर नैरित दिशा में रूहों की एकदिली का है। अर्श की रूहें मूल-मिलावा में विराजमान हैं। यदि आत्म-दृष्टि से देखते हैं तो इनकी महिमा का पता लगता है।

**अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए न सकें एक खिन।**
**ए माहें क्यों होंए जुदियां, असल रूहें एक तन।। २ ।।**

परमधाम की जितनी रूहें हैं एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकतीं, क्योंकि एक तन हैं।

**इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त।**
**एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित।। ३ ।।**

इन सबकी अकल, चित्त, दिल और इश्क एक हैं। स्नेह, हित हमेशा अखण्ड है।

Nijanand App

**इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल।**
**देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल।।४।।**

इनके दिल में बैठकर देखें तो सबका एक रूप एक सागर के समान दिखाई देता है, क्योंकि सबों का दिल एक है, इसलिए हिल-मिलकर बैठी हैं।

**हांस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल।**
**तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल फैल जो हाल।।५।।**

इनकी हंसी, विलास, सुख, कहनी, करनी, रहनी और स्वभाव एक सा है। इनका वर्णन कैसे करूं?

**तो कह्या वाहेदत इनको, अर्स अरवा हक जात।**
**ज्यों जोतें जोत उद्दोत है त्यों, सूरत की सूरत सिफात।।६।।**

इसलिए अर्श की वाहेदत श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, यह अखण्ड परमधाम में रहने वाली हैं, इसलिए ही तो वाहेदत कहते हैं। जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक अधिक सुन्दर लगता है ऐसे ही इनके एक स्वरूप से दूसरा अधिक तेजोमयी है।

**इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए।**
**एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए।।७।।**

यदि एक रूह श्री राजज महाराज के रहस्य को दूसरी से बताती है तो दूसरी के तन में अपार खुशी होती है। इस तरह से रूह की एकदिली का वर्णन कैसे करूं?

**वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से।**
**दिल दूजी के यों आवत, ए सब सुख लिया मैं।।८।।**

एक सखी दूसरी से बताती है कि मैंने श्री राजजी महाराज से कैसे सुख लिया, तो दूसरी समझती है कि ओहो! यह सुख तो मैंने भी लिया है।

**एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों।**
**यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों।।९।।**

एक ही बात से दूसरी सखी को भी सुख मिलता है। इसी तरह से सबों के दिल एक हैं। फिर इनका वर्णन जुदा-जुदा कैसे करें?

**एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए।**
**जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए।।१०।।**

एक सखी श्री राजजी महाराज से बात करती है तो दूसरी को सुख मिलता है। जब श्री राजजी को बोलते हुए देखती हैं तो दोनों को सुख होता है।

**अरस-परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए।**
**अति सुख पावें बड़ीरूह, ए तिनके अंग सब सोए।।११।।**

इस तरह से सभी अरस-परस श्री राजजी महाराज से आराम व सुख लेती हैं। इससे बड़ी रूह श्यामाजी महारानी को अपार सुख होता है, क्योंकि सब रूहें तो श्यामाजी के अंग हैं।

Nijanand App

**जो सुख पावत बड़ीरूह, सब तिनके सुख सनकूल।**
**ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल।। १२ ।।**

बड़ी रूह श्यामा महारानी को जो सुख मिलता है वही सुख सबको मिलता है। जैसे वृक्ष की जड़ में जल सींचने से ठीक उसी तरह पत्ते, डाली, फल, फूल को जल पहुंच जाता है।

**त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ीरूह को।**
**बड़ीरूह का सुख रूहन, आवत है सब मों।। १३ ।।**

श्री राजजी महाराज का जितना सुख श्यामा महारानी को मिलता है, उतना ही श्यामा महारानी का सुख सब रूहों में आ जाता है।

**या भूखन या वस्तर, सिनगार के बखत।**
**एक पेहेने सुख दूजी को यों, सबों सुख होत अतंत।। १४ ।।**

सिनगार के समय में एक सखी वस्त्र और आभूषण धारण करती है तो सुख दूसरी को होता है। इसी तरह से सभी सखियों को सुख मिलता है।

**या जो बखत आरोगने, या कोई अर्स लज्जत।**
**सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत।। १५ ।।**

आरोगने के समय या और किसी लज्जत के समय एक रूह से दूसरी देखने वाली को और कहने वाली को अधिक सुख मिलता है।

**ए सुख बातें अर्स की, अलेखे अखंड।**
**क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड।। १६ ।।**

यह परमधाम के सुख की बातें अखण्ड और बेशुमार हैं। संसार में बैठकर इस झूठी जबान से मैं कैसे वर्णन करूं?

**मैं नेक कही इन बिध की, सो अर्स में बिध बेसुमार।**
**इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार।। १७ ।।**

मैंने तो यह थोड़ी सी हकीकत कही है। परमधाम में तो बेशुमार शोभा है। जिस खूबी और शोभा का पार न हो उसे यहां के शब्दों में कैसे कहा जाए?

**तो कह्या रसूल ने, अर्स में वाहेदत।**
**सो कह्या इन माएनो, ए रूहें एक दिल एक चित्त।। १८ ।।**

इसलिए रसूल साहब ने कहा है कि परमधाम में रूहें एक दिल, एक चित्त होने से उनकी वाहेदत कहलाती हैं।

**एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार।**
**तो कही जो चीज अर्स की, सो चीजें चीज अपार।। १९ ।।**

एक रूह जो सुख लेती है, वह सुख बारह हजार को होता है, इसलिए परमधाम की जो चीजें कही हैं, सभी बेशुमार हैं।

Nijanand App

**जो कोई चीज अर्स में, बाग जिमी जानवर।**
**ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्यों ए कर।। २० ।।**

परमधाम के बाग, जमीन, जानवरों के इश्क का बल और सुख का पार नहीं है।

**या पसु या बिरिख कोई, अपार तिनों की बात।**
**तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात।। २१ ।।**

पशु हो या वृक्ष, सबकी शोभा बेशुमार है तो फिर रूहों के सुखों का वर्णन कैसे करूं जो श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं।

**जिन किनको संसे उपजे, खेल देख के यों।**
**ए जो रूहें अर्स की, तिनका इस्क न रह्या क्यों।। २२ ।।**

परमधाम की रूहों को खेल में देखकर संशय नहीं होना चाहिए कि इनका इश्क कहां गया।

**इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अर्स के माहें।**
**क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहें।। २३ ।।**

रूहें और इनका इश्क सदा अखण्ड परमधाम में अखण्ड है, इसलिए परमधाम से न ही रूहें आ सकती हैं और न उनका इश्क ही, क्योंकि वहां कुछ कम नहीं होता।

**उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत।**
**और इस्क जाए क्यों इनों का, जिनकी एती बड़ी सिफत।। २४ ।।**

वहां कमी कैसे हो सकती है? और भला रूहें कैसे यहां आ सकती हैं? जिनकी इतनी बड़ी भारी महिमा है उनका इश्क कहां जा सकता है?

**जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत।**
**जो इलम विचारे हक का, ताको इस्क बढ़त।। २५ ।।**

यह रूहें श्री राजजी की ही अंगना कहलाती हैं। परमधाम में यह सब एक हैं। इस तरह से जो जागृत बुद्धि तारतम वाणी से विचार करेगा, खेल में उसका इश्क बढ़ता रहेगा।

**ए केहेती हों मैं तिनको, कोई संसे ल्यावे जिन।**
**ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हांसी ऊपर रूहन।। २६ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस बात में कोई संशय मत लाओ। यह अनहोनी श्री राजजी महाराज ने रूहों से मजाक (हंसी) करने के लिए की है।

**ना तो ए कबहूं नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन।**
**एक जरा अर्स का, उड़ावे चौदे भवन।। २७ ।।**

वरना यह हो नहीं सकता कि पारब्रह्म अक्षरातीत की रूहें सपने में आकर झूठ का खेल देखें, क्योंकि परमधाम के एक कण के सामने चौदह लोक का ब्रह्माण्ड टिक नहीं सकता।

**ए हकें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन।**
**पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन।। २८ ।।**

यह तो श्री राजजी महाराज ने अपनी हिकमत (कारीगरी) से रूहों को फरामोशी देकर उनको झूठा खेल दिखाया है। रूहें परआतम की नजर से खेल देख रही हैं।

Nijanand App

**आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक।**
**सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक।। २९ ।।**

यह परदा श्री राजजी महाराज के सामने नहीं है। यह उन्होंने अपनी रूहों के आगे फरामोशी का परदा करके खेल दिखलाया है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को देखते हैं। यह फरामोशी तो नाम मात्र की है।

**इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर।**
**अपने तन हकें जानके, करी हांसी रूहों ऊपर।। ३० ।।**

श्री राजजी महाराज ने इस तरह से खेल दिखाया है वरना रूहें यह झूठा खेल कैसे देख सकतीं, श्री राजजी महाराज ने रूहों को अपनी अंगना जानकर उन पर मजाक (हंसी) किया है।

**सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें।**
**खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहें।। ३१ ।।**

यह मजाक (हंसी) भी सुख देने के वास्ते की है, जिसकी खबर अभी किसी को नहीं है। परमधाम में जब जागेंगे तब यह खेल बहुत सुख देगा।

**हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर।**
**इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर।। ३२ ।।**

श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से हैं और सब रूहें श्री श्यामा महारानी के नूर से हैं। इस तरह से परमधाम में सब एकदिली है और सब श्री राजजी महाराज के तन की शोभा हैं।

**महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर।**
**अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अंतर।। ३३ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने रूहों के एकदिली के यह तीसरे सागर का बयान किया है। अब चौथा सागर दधि सागर जो सिनगार का सागर है, का बयान करती हूं। इसे अपनी रूह की नजर से देखो।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २०८ ।।

## सागर चौथा जुगल किसोर का सिनगार
## श्री राजजी का सिनगार–मंगला चरन

**चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ।**
**ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।। १ ।।**

चौदह लोक की दुनियां में किसी ने भी आज दिन अखण्ड परमधाम की हकीकत नहीं बताई। वह बता भी नहीं सकते। परमधाम कहां है, इसका ज्ञान भी उन्हें नहीं है।

**आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए।**
**तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह।। २ ।।**

खुदाई इलम (कलमा) गवाही देता है कि खुदा एक अक्षरातीत है। अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मैं (महामति) अखण्ड परमधाम पहुंची।

Nijanand App